हिंदी का वैश्विक विमर्श

डॉ.कृष्ण कुमार मिश्र

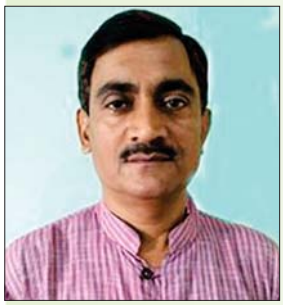

डॉ.कृष्ण कुमार मिश्र ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से रसायन विज्ञान में पीएच-डी. की उपाधि प्राप्त की। आप टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान मुंबई के होमी भाभा विज्ञान केन्द्र में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। लोकप्रिय विज्ञान लेखक के रूप में आपकी अपार ख्याति है जोकि हिन्दी में आपके व्यापक लेखन से निर्मित हुई है। आपके 250 से अधिक लेख तथा 22 पुस्तकें प्रकाशित हैं। राजभाषा गौरव पुरस्कार, होमी जहाँगीर भाभा स्वर्ण पुरस्कार, शताब्दी सम्मान, राजभाषा भूषण पुरस्कार, इस्वा सम्मान सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित डॉ.मिश्र मुंबई में निवास करते हैं।

कहा जाता है कि भाषा विचारों तथा भावों की वाहिनी है। यह वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों तथा भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। भाषा मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों का वह समूह है जिसके द्वारा मन की बात संप्रेषित की जाती है। मौखिक भाषा ध्वनियों का समुच्चय है जिसके जरिये किसी समाज या राष्ट्र के लोग अपने मनोगत भावों तथा विचारों का परस्पर आदान-प्रदान करते हैं। भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची के अनुसार वर्तमान में कुल 22 भाषाओं को स्वीकृति प्रदान की गयी है। ये हैं- असमी, बंगला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयाली, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलुगू, उर्दू, सिंधी, बोडो, डोगरी, कोंकणी, मैथिली, मणिपुरी, संथाली तथा नेपाली। ये सभी भारतीय भाषायें हैं। लेकिन 14 सितम्बर 1949 को भारत की संविधान सभा ने खड़ी बोली में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली भाषा हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया था यानी संघ सरकार के कामकाज की भाषा। उस समय यह तय किया गया था कि हिन्दी का प्रचार-प्रसार, सामासिकता तथा इसकी सर्व स्वीकार्यता के लिए प्रयास किए जाएंगे। सुविधा के लिए अगले 15 वर्षों तक सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में अंग्रेजी को कायम रखने का प्रावधान किया गया। कालान्तर में राष्ट्रपति के अध्यादेशानुसार अंग्रेजी को बार-बार विस्तार मिलता गया तथा हिन्दी की अनिवार्यता पर जोर नहीं दिया गया। इससे हिन्दी की अनदेखी होती चली गयी तथा उसे देश में आधिकारिक तौर पर उसका वाजिब स्थान आज तक नहीं मिल सका।

दुनिया भर में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार तथा उसे विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में 30 देशों के 122 प्रतिनिधि शामिल हुए थे। उसके बाद से दुनिया के कई देशों में विश्व हिन्दी सम्मेलन मनाया जा चुका है। विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना मारीशस की राजधानी पोर्ट लुई में की गयी है। वर्ष 2006 से हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिन्दी प्रसार तथा विस्तार के लिए जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रस्तुत करना है। विदेशों में स्थित भारतीय दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। भारत सरकार की कोशिश है कि हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संध की आधिकारिक भाषा बने।

जनभाषा, राष्ट्रभाषा, विश्वभाषा

महात्मा गांधी ने कहा था कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती। आजादी के पहले से लेकर आज तक देश के सभी राष्ट्रनायकों तथा महापुरुषों ने भारत के लिए राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की वकालत की है। लेकिन अफसोस कि हिन्दी को उसका समुचित स्थान आज तक नहीं मिल सका है। कहा जाता है कि हिन्दी भाषी प्रान्तों में भाषायी चेतना का अभाव है। आखिर ऐसे कितने लोग हैं जो हिन्दी को अपनी भाषा मानते में गर्व का अनुभव करते हैं। हिन्दी प्रदेशों के छात्रों के लिए हिन्दी भाषा गौण होती जा रही है। वे उसे सिर्फ इम्तहान के समय पढ़कर पास हो जाना चाहते हैं। उन्हें हिन्दी के लेखकों, कवियों, उनकी कृतियों तथा अवदानों से बहुत ज्यादा लेना-देना नहीं है। इन सबके गहरे सामाजिक, समाजवैज्ञानिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक कारण हैं।

हिन्दी वास्तव में भारत की जनभाषा है। वह एक मजबूत संपर्क भाषा भी है। वह एक बड़े भूभाग की जन-जन की भाषा है चाहे वह किसी भी पंथ, क्षेत्र या अंचल का हो। हिन्दी उत्तर-मध्य भारत के सभी राज्यों में पढ़ी, लिखी, बोली व समझी जाती है। देश के लोग जब अपने प्रांत से दूसरे प्रांतों में जाते हैं तो हिन्दी में ही संवाद करने की कोशिश करते हैं। वास्तव में हिन्दी अघोषित रूप से भारत की राष्ट्रभाषा है। लेकिन जब हिन्दी को औपचारिक तौर पर राष्ट्रभाषा बनाने की बात चलती है तो कुछ विघ्नसंतोषी लोगों को यह बात रास नहीं आती। विंध्य के दक्षिण पठार के कुछ राज्यों से विरोध के स्वर सुनायी पड़ने लगते हैं। उन्हें लगता है कि हिन्दी थोंपी जा रही है तथा इससे उनकी क्षेत्रीय भाषाओं की अस्मिता तथा स्वायत्तता प्रभावित होगी। राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की परिकल्पना इस रूप में ही की गई थी कि अपने-अपने राज्यों में प्रांतीय भाषाएँ ही अपने पूरे अधिकार के साथ अपनी-अपनी भूमिकाएँ निभाएँगी। जो भूमिका हिंदी की हिंदीभाषी राज्यों में होगी, वहीं भूमिका हिंदीतर प्रांतों में उनकी अपनी-अपनी भाषाओं की होगी। राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी अपने ही इतर भाषाओं के साथ उनका तालमेल बनाने में सहायक भर होगी। जहाँ उनका अधिकार होगा, वहाँ तो हिंदी का कोई दखल होगा ही नहीं। लेकिन राजनीतिक स्वार्थ के चलते हिन्दी पर राजनीति की गयी तथा दुष्प्रचार किया गया। वास्तव में हिन्दी किसी भी भाषा के लिए कभी खतरा थी ही नहीं। हाँ, अँग्रेजी ने जरूर भारत की भाषायी अस्मिता पर चोट की है। वह औपनिवेशिक तथा साम्राज्यवादी भाषा रही है। भारत सहित दुनिया की तमाम भाषाओं को वास्तविक खतरा सिर्फ और सिर्फ अंग्रेजी भाषा से है। तमाम कठिनाइयों के बावजूद हिन्दी विश्वमंच पर अपनी पहचान बना रही है। दुनिया के करीब 150 देशों में भारतीय समुदाय के लोग रहते हैं। वे वहां पर परस्पर हिन्दी में ही संवाद करते हैं। अमेरिका में 30 लाख भारतीय हैं। यूनाइडेट किंगडम में 15 लाख हैं। कनाडा में भी 14 लाख हिन्दुस्तानी हैं। सर्वाधिक बड़ी संख्या खाड़ी देशों में भारतीयों की है। अकेले संयुक्त अरब अमीरात में 26 लाख हिन्दुस्तानी रहते हैं। यह संख्या वहां की कुल जनसंख्या की 30 प्रतिशत है। इसी वर्ष अबूधाबी सरकार ने

18वीं सदी के अंत तक आते-आते भारत में अँग्रेजी राज को कायम रखने के लिए बड़ी संख्या में कर्मचारियों और बाबुओं की आवश्यकता महसूस की गई। अधिकारियों के स्तर पर तो अँग्रेजों की ही नियुक्ति होती थी, मगर निचले स्तर पर इतनी बड़ी संख्या में अँग्रेजों की नियुक्ति संभव नहीं थी। इस मजबूरी में स्थानीय लोगों को अँग्रेजी में शिक्षित करने के बारे में सोचा गया।

हिन्दी को वहाँ की न्यायालयीन भाषा के तौर पर स्वीकृति दी है। पहले वहां अरबी तथा अंग्रेजी भाषाएं अदालत की भाषाएँ थीं। अप्रवासी भारतीय समुदाय ने हिन्दी को विदेशों में खूब फैलाया तथा प्रचारित किया है।

भाषायी स्वराज का प्रश्न

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी ने महात्मा गांधी को एक सम्मेलन के लिए भेजे गए पत्र में कहा था कि "भाषा माता के समान है। माता पर हमारा जो प्रेम होना चाहिए, वह हम लोगों में नहीं है। हमें अब अपनी मातृभाषा की और उपेक्षा करके उसकी हत्या नहीं करना चाहिए।" महात्मा गांधी भारत राष्ट्र की राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को स्थापित करने के प्रबल समर्थक थे और इस रूप में अँग्रेजी से उनका जबर्दस्त विरोध भी था। वे कभी नहीं चाहते थे कि देश को हम अँग्रेजों से तो आजाद करा लें, लेकिन अँग्रेजी के आगे नतमस्तक होते रहें। और इसका कारण एकदम सीधा था। अँग्रेजी प्रभु वर्ग की भाषा थी और आज भी वह अपने इस अभिजात्य चरित्र को बनाए हुए है। महात्मा गाँधी जी ने सन् 1914 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने पर पुरुषोत्तम दास टंडन को एक पत्र में लिखा था, "मेरे लिए हिन्दी का प्रश्न तो स्वराज का प्रश्न है।" इसके बाद गाँधी जी ने दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार सभा के द्वारा हिन्दीतर भाषी प्रांतों में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार कराया। गांधी जी समझते थे कि पूरे देश की जनता को अँग्रेजी सिखा पाना न तो संभव होगा और न उचित। ऐसे में देश में कभी भी असली स्वराज नहीं आ सकता। सिर्फ शासक वर्ग का रंग बदलेगा, मानसिकता नहीं। और यह बात आज के आजाद भारत की एक कड़वी सच्चाई भी है।

इस सच्चाई को आज 72 साल के आजाद भारत में गांधी जी के इस कथन से परखा जा सकता है- "अगर स्वराज अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों का और उन्हीं के लिए होने वाला है तो बेशक अँग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी। लेकिन अगर स्वराज देश के करोड़ों भूखों, निरक्षर भाई-बहनों और दलितों तथा वंचितों का हो, और इन सबके लिए होने वाला हो, तो हिंदी ही एक मात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है।" विश्व के प्रायः सभी देशों ने अपने ही देश की भाषा को शिक्षा-दीक्षा के लिए स्वीकार किया। यूरोप के स्विट्जरलैंड सरीखे छोटे से देश ने भी अपनी भाषा को अपने यहाँ शिक्षा का माध्यम बनाया है।

वास्तव में भारत में अंग्रेजी को बढ़ावा देने के पीछे ईस्ट इण्डिया कंपनी का राज रहा है। 18वीं सदी के अंत तक आते-आते भारत में अँग्रेजी राज को कायम रखने के लिए बड़ी संख्या में कर्मचारियों और बाबुओं की आवश्यकता महसूस की गई। अधिकारियों के स्तर पर तो अँग्रेजों की ही नियुक्ति होती थी, मगर निचले स्तर पर इतनी बड़ी संख्या में अँग्रेजों की नियुक्ति संभव नहीं थी। इस मजबूरी में स्थानीय लोगों को अँग्रेजी में शिक्षित करने के बारे में सोचा गया। लार्ड मैकाले इस विचार का अगुआ था जिसने भारतीयों को सदा के लिए मानसिक गुलाम बनाना चाहा। वह भारतीयों के बीच से ही एक ऐसी नस्ल पैदा करना चाहता था जो तन से हिन्दुस्तानी होगी लेकिन मन से अंग्रेजी। उसका मकसद भारत में ऐसी शिक्षा-व्यवस्था कायम करना था जिससे भारतीय जीवन-शैली और लोक-संस्कृति का पश्चिमीकरण हो जाए। लार्ड मैकाले की नीति बहुत ही स्पष्ट थी। उसकी सोच थी कि अँग्रेजी शिक्षा का प्रचार-प्रसार कर भारतीयों को मात्र उतनी ही शिक्षा दी जाए, जिससे कि वे अच्छे

नौकर साबित हो सकें। वह चाहता था कि पढ़ा-लिखा भारतीय विचारों से बिल्कुल पश्चिम परस्त हो जाए। भारतीय केवल खून और रंग की दृष्टि से हिंदुस्तानी हों! किंतु अपनी रुचि, भाषा, भावों और विचारों की दृष्टि से अँग्रेज हो।

अंग्रेजी का मोहजाल

आज हमारे देश का शिक्षित वर्ग अँग्रेजी के मोहजाल में फँस गया है। उसे अपनी ही भाषा से असंतोष हो गया है। उसे लगता है कि अंग्रेजी सत्ता की भाषा है। इसलिए यदि ओहदा प्राप्त करना है तो अंग्रेजी सीखना जरूरी है। वे अंग्रेजी को एक सीढ़ी के रूप में देखते हैं जिसके जरिये वे उच्च पायदान पर पहुंच सकते हैं। जिस दिन देश आजाद हुआ उसी दिन गांधी जी ने कहा था कि- अगर मेरे हाथों में तानाशाही सत्ता हो तो मैं आज से ही विदेशी माध्यम (अँग्रेजी) से दी जाने वाली शिक्षा बंद करा दूँ और सारे शिक्षकों और प्रोफेसरों से यह माध्यम तुरंत बदलवा दूँ। अँग्रेजी को ज्ञान की भाषा समझना राष्ट्रीय विपत्ति है तथा इतिहास में अँग्रेजी को विदेशी शासन की बुराइयों में से सबसे बड़ी बुराई माना जाएगा। इसलिए जितनी जल्दी हो, भारतीय मानस को इस मोहजाल से मुक्त होना चाहिए।

देश भर में अब बच्चों को शुरुआती कक्षा से अंग्रेजी पढ़ाए जाने पर जोर है। दुनिया के सभी शिक्षाशास्त्रियों ने बुनियादी शिक्षा के लिए मातृभाषा की वकालत की है। लेकिन हमारे देश में अंग्रेजी मोह के चलते यह सर्वमान्य तथ्य भी नकारा जा रहा है। ऐसे में देश के बच्चे अपनी भाषा कब पढ़ेंगे। आज की उच्च शिक्षा प्रायः अंग्रेजी में दी जा रही है। व्यावसायिक पाठ्यक्रम अंग्रेजी में ही हैं। विज्ञान, तकनीकी,

अभियांत्रिकी, चिकित्सा, पराचिकित्सा, प्रबन्धन, वित्त, वाणिज्य, सभी के पाठ्यक्रमों का माध्यम अंग्रेजी है। भाषाओं, समाज विज्ञान तथा मानविकी के विषयों को छोड़ दें तो सभी विषयों के शोध तथा विकास का काम अंग्रेजी में हो रहा है। एक तरह से यह औपनिवेशिक बोझ को लगातार ढोये जाते रहने जैसा है। आज गली, मुहल्लों, कस्बों तथा गांवों में जगह-जगह अंग्रेजी माध्यम के कान्वेन्ट स्कूल कुकुरमुत्ते की तरह उगते जा रहे हैं। कुछ साल पहले राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने देश भर में पहली कक्षा से अंग्रेजी पढ़ाये जाने की सिफारिश की थी। जब शिक्षा का माध्यम ही हिन्दी नहीं रहेगी तो उसका विकास तथा प्रसार कैसे होगा? एक भ्रांति जो प्रायः अंग्रेजीदां लोगों द्वारा जोर-शोर से फैलायी जाती रही है, वह यह है कि हिन्दी अभी इतनी समर्थ नहीं है कि उसमें उच्च शिक्षा दी जा सके। सच्चाई यह है कि आज हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य की कमी नहीं है। तकनीकी शब्दों के लिए शब्दावली आयोग द्वारा तैयार कोश विज्ञान शिक्षा के लिए पर्याप्त है। हिन्दी में ढेरों शब्दकोश, समान्तर कोश, पारिभाषिक कोश तैयार हो चुके हैं। हिन्दी की शब्द-संपदा 9 लाख के आंकड़े को कभी की पार कर चुकी है। जरूरत सिर्फ इच्छा शक्ति की है। यदि दृढ़ संकल्प एवं निष्ठा हो तो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की समूची शिक्षा हिन्दी माध्यम से संभव है।

भाषागत आंकड़े- एक दृष्टि

वर्ष 2001 की राष्ट्रीय जनगणना में यद्यपि 122 भारतीय भाषाओं का ही उल्लेख किया गया है। किंतु बड़ौदा स्थित पीपुल्स लिग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया के हालिया सर्वेक्षण के मुताबिक वर्तमान में भारत में कुल 780 भाषाएँ बोली जाती हैं। इस संस्था का नतीजा बताता है कि पिछले पचास वर्षों में देश में करीब 250 भाषाएं लुप्त हो चुकी हैं। यानी औसतन हर साल 5 भाषाएं। यह चौंकाने वाला आंकड़ा है। ऐसा इसलिए क्योंकि यह औपनिवेशिक काल की बात नहीं है बल्कि आजादी के बाद की धटना है जब केन्द्र तथा प्रांतों में चुनी हुई सरकारें हैं जिन पर देश की भाषा, संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्धन का दायित्व रहता है तथा हर मंत्रिमंडल में इसके लिए बाकायदा विभाग तथा मंत्री होते हैं। इतनी भारतीय भाषाओं का लुप्त होना एक अपूरणीय क्षति है। किसी भाषा के लुप्त होने से उसके साथ जुड़ी हजारों साल की संस्कृति तथा जीवन-दर्शन सदा के लिए समाप्त हो जाता है। भारत में सर्वाधिक भाषायी विविधता जनजातीय क्षेत्रों में है। उनके संरक्षण तथा प्रोत्साहन की जरूरत है। आज दुनिया में कुल 7105 भाषाएँ बोली जाती हैं।

हिन्दी भाषा- विश्व दृष्टि

हिन्दी वैश्विक भाषा है। विश्व मंच के अनुरूप इसमें साहित्य, कला तथा संस्कृति के कार्यक्रम हो रहे हैं। तमाम व्यक्ति तथा संस्थायें हैं जो

सारिणी-1 विश्व में बोली जाने वाली कुल भाषाएँ एवं क्षेत्रवार विवरण

क्षेत्र	जीवित भाषा		बोलने वालों की संख्या			
	संख्या	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	औसत	माध्यिका
अफ्रीका	2,146	30.2	78,91,38,977	12.7	367,726	27,000
अमेरिका	1,060	14.9	5,11,09,910	0.8	48,217	1,170
एशिया	2,304	32.4	374,29,96,641	60.0	1,624,565	12,000
यूरोप	284	4.0	1,646,624,761	26.4	5,797,975	61,150
प्रशांत	1,311	18.5	6,551,278	0.1	4,997	950
कुल	7,105	100.0	6,236,421,567	100.0	877,751	7,000

सारिणी-2 भारत में दस बड़ी भाषाएँ

श्रेणी	भाषा	2001 की जनगणना (कुल जनसंख्या 1,02,86,10,328)		1991 की जनगणना (कुल जनसंख्या 83,85,83,988)	
		बोलने वालों की संख्या	प्रतिशत	बोलने वालों की संख्या	प्रतिशत
1.	हिन्दी	42,20,48,642	41.03%	32,95,18,087	39.29%
2.	बंगला	8,33,69,769	8.11%	6,95,95,738	8.30%
3.	तेलुगु	7,40,02,856	7.19%	6,60,17,615	7.87%
4.	मराठी	7,19,36,894	6.99%	6,24,81,681	7.45%
5.	तमिल	6,07,93,814	5.91%	5,30,06,368	6.32%
6.	उर्दू	5,15,36,111	5.01%	4,34,06,932	5.18%
7.	गुजराती	4,60,91,617	4.48%	4,06,73,814	4.85%
8.	कन्नड़	3,79,24,011	3.69%	3,27,53,676	3.91%
9.	मलयालम	3,30,66,392	3.21%	3,03,77,176	3.62%
10.	उड़िया	3,30,17,446	3.21%	2,80,61,313	3.35%

हिन्दी को विश्व फलक पर स्थापित करने में अतुलनीय कार्य कर रहे हैं। इस क्रम में 'विश्व रंग' का उल्लेख करना समीचीन होगा। साहित्य तथा कला का यह विश्वस्तरीय सम्मेलन 4 से 10 नवम्बर 2019 को हिन्दी के हृदय प्रदेश, मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित किया गया। इसे प्रणेता हैं सुविख्यात साहित्यकार, संस्कृतिकर्मी तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय संतोष चौबे। उनके स्तुत्य प्रयासों तथा संकल्पों से यह कार्यक्रम अपनी सफलता को प्राप्त हुआ। इसमें दुनिया के 30 से ज्यादा देशों के कुल 500 लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकारों तथा रंगकर्मियों ने भाग लिया। 'विश्व रंग' में नोबेल, बुकर, साहित्य अकादमी, पद्म पुरस्कारों से सम्मानित शताधिक विभूतियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को अद्भुत भव्यता प्रदान की। देश के प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने इसे बखूबी स्थान दिया तथा इसकी महत्ता को भी रेखांकित किया। वैसे तो देश में कई साहित्यिक महोत्सव यानी लिटफेस्ट आयोजित होते हैं लेकिन उनमें प्रायः आंग्लभाषा का बाहुल्य तथा वर्चस्व दीखता है। लेकिन विश्व रंग ने अपनी छटा से साबित कर दिया कि हिन्दी पूर्णतः समर्थ है तथा दुनिया की भाषाओं से किसी भी मायने में कमतर नहीं है।

बाजारवाद के चलते इलेक्ट्रानिक तथा प्रिंट माध्यमों में हिन्दी की उपस्थिति बेशक बढ़ी है। पत्रकारिता, संचार माध्यमों, व्यावसायिक उद्यमों, विज्ञापनों, चैनलों, वेबसाइटों, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से हिन्दी जुड़ने की कोशिश कर रही है। इन सारे माध्यमों को हिन्दी की जरूरत भी है क्योंकि वे हिन्दी के जरिये ही खरीददारों और उपभोक्ताओं के पास पहुंच सकते हैं। एक अनुमान के मुताबिक आज भी इस देश में बमुश्किल पांच से सात प्रतिशत लोग अंग्रेजी का जीवन जीते हैं। इसलिए बाजार से जुड़े ये सारे माध्यम हिन्दी का उपयोग कर रहे हैं। हिन्दी बाजार की भाषा बने इसमें कोई हर्ज नहीं है। लेकिन चिंता इस बात की है कि यह बाजारू बनती जा रही है। इसकी स्वाभाविक विशिष्टता लुप्त हो रही है। अंग्रेजी के धालमेल के साथ इसे विरूपित किया जा रहा है। हिन्दी फिल्मों के नाम अब अंग्रेजी में रखे जा रहे हैं। हिन्दी फिल्मों के सितारे फिल्म समारोहों में अंग्रेजी में बोलते नजर आते हैं। हिन्दी में वे सिर्फ वे रटे-रटाये संवाद बोलते हैं,

या फिर बोल सकते हैं। विज्ञापन की दुनिया में हिन्दी बड़े पैमाने पर रोमन लिपि में नगरों, महानगरों की सड़कों, गली-चौराहों पर देखी जा सकती है। एक जमाने में अंग्रेजों ने पूरी कोशिश की थी कि हिन्दी की लिपि देवनागरी की जगह रोमन हो। लेकिन भाषाप्रेमी भारतीयों के प्रखर विरोध के चलते वे उसे लागू न कर सके। लेकिन जो चीज फिरंगी नहीं कर सके, वह हमारे बीच के ही अंग्रेजीपरस्त आज बखूबी कर रहे हैं। इन विज्ञापनों के माध्यमों से आज की पीढ़ी जो हिन्दी देख, सुन तथा सीख रही है, वह न तो पूरी तरह हिन्दी है, और न ही अंग्रेजी। वास्तव में यह दौर भाषायी अपसंस्कृति का दौर है।

निष्कर्ष

कुछ आलोचक कहते सुने जाते हैं कि हिन्दी साहित्यिक भाषा बनकर रह गई है। हिन्दी में मौलिक चिंतन, ज्ञान-विज्ञान से संबंधित नवाचार, मौलिक और नवीन चिंतन का काम बहुत कम हो रहा है। समाज विज्ञान, मानविकी से लेकर प्रकृति विज्ञान तक में किताबों और लेखों का अनुवाद ही दृष्टिगोचर होता है। हिन्दी में आज विज्ञान की पत्रिकाएं बहुत कम हैं। समाजविज्ञान की पत्रिकाएं भी कम ही हैं। ऐसी स्थिति में हिन्दी उच्च शिक्षा का माध्यम नहीं बन पा रही है। हमारे पड़ोसी दो देशों चीन और जापान से यह सबक सीखा जा सकता है कि अपनी भाषा में भी विज्ञान तथा तकनीकी के सभी काम बखूबी किए जा सकते हैं। इसलिए हमारे देश में जब तक ज्ञान-विज्ञान का काम अंग्रेजी में होता रहेगा, हिन्दी तब तक विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा की भाषा नहीं बन सकेगी। आज अंग्रेजी के सामने सभी भारतीय भाषाएं संघर्ष कर रही हैं। इसमें जो कमजोर साबित होंगी उनका दम जल्दी घुट जाएगा तथा वे मुकाबले से बाहर हो जाएंगी। जो दमखम वाली होंगी वे ज्यादा देर तक मुकाबला कर सकेंगी। तमाम भारतीय भाषाओं के लिए यह एक संक्रमण काल है। हिन्दी के पक्ष में एक बात जाती है वह है हिन्दी बोलने वालों की विशाल आबादी तथा हिन्दी प्रदेशों का विस्तृत भूखंड। इस संक्रमण काल में आज हमारा किया गया कार्य तथा योगदान ही हिन्दी को ताकत प्रदान करेगा तथा उसकी भविष्य की दशा और दिशा तय करेगा।

vigyan.lekhak@gmail.com

❑❑❑